# कौन थे स्वामी दयानन्द सरस्वती जी

जन्म-१२ फरवरी १८२४

मृत्यु-३० अक्टूबर १८८३

मृत्यु का कारण- जहर दिया गया |

- स्वदेशी का पहला उद्घोष दिया |
- उस समय में भारत स्वराज का उद्घोष करने वाले |
- भारत केवल भारतीयों का है कहने वाले |
- आर्य समाज के संस्थापक |
- आर्य समाज ने आजादी के आन्दोलन में बहुत बड़ी भूमिका निभाई |
- अपने काल के सर्वोपरी देशभक्त, ज्ञानी, विद्वानों में से एक |
- उसी समय कुछ और महापुरुष हुए जैसे
    - दयानन्द जी जन्म के ३९ वर्ष बाद विवेकानंद
    - दयानन्द जी के समकालीन ही
    - राजा राम मोहन राव

- राम कृष्ण परमहंश
- केशव चन्द्र सैन
- इश्वर चन्द्र विद्या सागर

परन्तु स्वामी दयानन्द जैसा कौन हुआ

- उस समय के जो भी वेद अध्ययनकर्ता थे वे केवल शास्त्र चर्चा करते, उन्हें देश से कोई लेना देना न था |
- उस समय का कोई विद्वान स्वामी दयानन्द के अलावा ऐसा दिखाई नहीं पड़ता जो शास्त्र के साथ-साथ शस्त्र से देश रक्षा कि बात करे |
- जब दयानन्द जी इनके बारे में विचार करते तो मुर्ख पण्डे उनसे कहते कि हे दयानन्द जी क्यों पछडे में पड़ते हो, ब्रह्म एक है उसी की उपासना करो |
- उन्हें कहा जाता कि राष्ट्र धर्म, समाज सुधार को छोड़िये |
- राष्ट्र के बारे में उस समय किसने कहा?—दयानान्द जी ने |
- किसने चिंतन किया की राष्ट्र पराधीन है?—सवामी दयानन्द जी ने |
- किसने चिंतन किया कि राष्ट्र का किसान गरीब है?—स्वामी दयानन्द जी ने |
- राष्ट्र में दलितों एवं नारियों कि दुर्गति के विरुद्ध किसने आवाज उठाई?—स्वामी दयानन्द जी ने |
- देश के सोए राजाओ को जगाने का काम किसने किया?—स्वामी दयानन्द जी ने |
- अब उस समय के अन्य महापुरुषों से स्वामी दयानन्द जी कि तुलना
    - (इस तुलना से में किसी के हृदय को ठेस नहीं पहुचाना चाहता हूँ)
    - राजा राम मोहन राव अंग्रेजो की प्रशंसा करते थे |
    - स्वामी विवेकानन्द अंग्रेजो की प्रशंसा करते थे |
    - राम कृष्ण परम हंस को तो काली के अलावा कुछ दीखता ही न था|

- अहमद खां तो केवल इस्लाम की चिंता करते थे |इस्लाम में सुधार की बात करते थे |
- केशव चन्द्र भी अंग्रेजो की प्रशंसा अधिक करते व वे तो अंग्रेजी में ही बाते करते और विदेशो में ही घुमा करते |
- स्वामी दयानन्द जी के अलावा किसे देश के हित की वांछा थी |

- फिर भी आज महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को कोई याद नहीं करता |
- स्वामी दयानन्द के अलावा कौनसा ऐसा धर्मात्मा था जो देश के बारे में सोच रहा था |
- कौनसा विद्वान या वेदपाठी देश की चिंता कर रहा था |
- उस समय केवल दयानन्द जी ही ऐसे व्यक्ति थे जिसे देश के प्रति असली चिंता थी |
- और दयानन्द जी के दयानन्द बनने का असली कारण थे उनके गुरु स्वामी विरजानन्द |
- विरजानन्द जी ५(पञ्च) वर्ष की आयु में ही अंधे हो गए थे |
- मथुरा के रहने वाले इन संत को भी देश की बड़ी चिंता थी |
- विरजानन्द जी बिना आँखों के ही देश कि दुर्दशा को देख रहे थे |
- और वो किसी ऐसे व्यक्ति कि तलाश में थे जो देश को बचा सके |
- विरजानन्द जी ने जयपुर के महाराज को पत्र लिखा देश कि शिक्षा व्यवस्था में सुधार करने के सम्बन्ध में लेकिन राजा के पोंगे राजपंडो ने राजा को भड़का दिया |
- पत्र में एक बड़ी बैठक करने को लिखा था कि विद्वानों की एक बड़ी बैठक कराओ देश की शिक्षा व्यवस्था को बदलने आदि के लिए पर पोंगे पंडो ने नहीं होंने दी |
- एक अंधा व्यक्ति देश को बचाने के लिए झटपटा रहा था और उस समय लोग ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या व अहम् ब्रह्मास्मि के नारे लगा रहे थे |
- शंकराचार्य के अनुयायी ॐ ब्रह्म , ॐ नम: शिवाय का जप करने में लगे थे |
- कोई अंग्रेजो की प्रशंसा में लगे थे |
- कोई अपने मत, पंथ, संप्रदाय के शिष्यों की संख्या बढाने में लगे थे |

- फिर विरजानन्द को मिले दयानन्द जी और विरजानन्द जी ने दयानन्द जी से दक्षिणा में उनका जीवन मांग लिया |
- उस समय विरजानन्द जी जैसा कोई वेदपाठी न था |
- जिस समय सब अंग्रेजो के तलवे चाट रहे थे तब भारतीय स्वराज की कमाना करने वाले एक ही तो थे वो थे स्वामी दयानन्द सरस्वती |
- वही विवेकानन्द जी यह कहते न थकते थे कि अमेरिका की महिलाये तो भारतीय महिलाओं से श्रेष्ठ है, सुन्दर है | भारत की महिलाये तो गन्दी है संस्कारहीन है |
- दयानन्द जी ने लिखा कि आर्यवर्त जैसा भूमंडल पर कोई अन्य देश नहीं,उस समय एसा लिखने की किस व्यक्ति की हिम्मत नहीं थी दयानन्द जी के अलावा|
- विद्यानन्द जी ने एक पुस्तक लिखी "बाघी दयानन्द" उसमे उन्होंने लिखा कि अंग्रेजी सरकार कैसे स्वामी दयानन्द जी पर नजर रखती थी |
- सोचने की बात यह है कि केवल दयानन्द जी पर ही इतनी कड़ी निगरानी क्यों रखते थे किसी अन्य पर क्यों नहीं |
- ऐसा क्या डर था अंग्रेजो को स्वामी दयानन्द जी से |
- पर दुःख की बात तो यह है कि लोगो ने भी दयानन्द जी को इतना सम्मान न दिया जितना अन्य
  लोगों को दिया |
- छुआछूत का विरोध किया, बाल विवाह का विरोध किया,भेदभाव का विरोध किया और स्त्री अशिक्षा का विरोध किया |
- मोहन राव केवल सती प्रथा तक सीमित थे |
- विवेकानन्द जी का कहना था की बालविवाह से जाति उन्नत होती है | यह कौनसा विज्ञान था मुझे मालूम नहीं|
- समाज सुधार का सम्पूर्ण मानचित्र किसने दिया?—स्वामी दयानन्द जी ने दिया |
- कौनसे महापुरुष को भारत देश की अर्थव्यवस्था चिंता थी?—स्वामी दयानन्द जी को |
- किसने किसानो को राजाओं का राजा कहा?—स्वामी दयानन्द जी ने |
- किसने गौ कृषि आदि संस्थाए बनवाई?—स्वामी दयानन्द जी ने |

- गाय व् कृषि की कैसे रक्षा हो इस विषय में किसने चिंतन किया?—स्वामी दयानन्द ने ।
- उस समय की महंगाई पर चिंतन कौन करता था?—स्वामी दयानन्द जी|
- और वो जो गाँधी जी ने दांडी यात्रा करी थी न नमक के लिए तो आपकी जानकारी के लिय बता दू इस विषय पर भी सबसे पहले आवाज स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने ही उठाई थी| पढना उनकी लिखी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश कभी उसमे साफ़-साफ़ लिखा है कि अब तो नमक पर भी कर लगने लगा है ये बरोबर नहीं है | गुजराती भाषा का शब्द इस्तेमाल किया कि ये बरोबर नहीं है|
- एक बार एक राजकुमार को विदेशी पहने देख कहा कि क्या खादी अच्छी नहीं लगती |राजकुमार ने खादी के वस्त्र पहनना शुरू कर दिए |
- गौहत्या बंद कराई, राजकुमारों को तक स्वदेशी पहनवाई, हिंदी भाषा स्वदेशी भाषा का प्रचार किया|
- सत्यार्थ प्रकाश में एक और बात आती है कि पोंगे पंडो ने स्वामी दयानन्द से पूछा की शुद्र यदि वेद पढ़े तो हम क्या करे तो स्वामी जी ने उत्तर दिया कि तुम कुए में पड़ो | उस समय तो सभी पोंगे पण्डे उनके दुश्मन बन गए |
- उस समय छुआछुत का विरोध करने पर पोंगेपंडो ने कहा कि दयानन्द ने तो धर्म को धरातल में पंहुचा दिया |
- देश के लिए इतना करने पर भी स्वामी दयानन्द जी को कोई याद नहीं करता|
- छुआछुत को मिटाने का श्रेय सीधा ज्योतिबा फुले एवं डॉ अम्बेडकरको दे दिया जाता है|
- पर पहले ये जानना जरुरी है कि अम्बेडकरजी किसको श्रेय देते थे | अम्बेडकर जी श्रेय देते थे श्रधानंद जी को | और जानकारी के लिए बता दू कि श्रधानंद जी श्रेय देते थे स्वामी दयानन्द जी को | यदि उस मुन्सी चंद जी को श्रधानंद नहीं बनाया होता तो अम्बेडकर जी क्या करते |
- उस समय में किस महापुरुष को युवको की बेरोजगारी की  चिंता थी?—स्वामी दयानन्द जी को थी|
- वो कहा करते थे कि देश के युवको को काम मिलना चाहिए | और आज के मुकाबले उस समय तो इतनी बेरोजगारी भी न थी |

- उन्होंने जर्मनी के प्रोफ़ेसर से पत्र व्यवहार किया कि आप भारत के युवको को कला प्रोद्योगिकी आदि की शिक्षा दे | क्या उस समय किसी और के मन में यह विचार आया?—नहीं |
- कौनसा महापुरुष भारत की शिक्षा के बारे में चिंतित था | कौन इतना आतुर था की भारत की पहले वाली शिक्षा पुनः आवे |
- उस समय गौशालाए किसने खुलाई?—स्वामी दयानन्द जी ने खुलाई |
- दयानन्द सही सलाह को तुरंत्त मान लेते थे| ऐसे महापुरुष आसानी से नहीं मिलते |
- ऋषि दयानन्द जी ऐसे महापुरुष थे जो हर क्षेत्र में आगे रहे |
- उस समय के पंडो को तो ईश्वर-मुक्ति के सिवा कुछ दीखता न था | न किसी कि भुख की चिंता थी |
- जब एक महिला ने अपने पुत्र के शरीर पर से कफ़न उतार कर फेक दिया तब वो रोये और किसने इस बात पर आंसू बहाए |
- अकाल पड़ने पर सब भूखे-प्यासे मर रहे थे तब कौन रोया?—स्वामी दयानन्द जी |
- किसने कहा कि देश पराधीन है व् दुखी है देश के सुख, हित आदि के लिए किसने आवाज उठाई?—स्वामी दयानन्द जी ने |
- पर्यावरण पर भी स्वामी जी चिंतन किया करते थे |
- राजनीती के भी ज्ञाता थे|
- कौनसा क्षेत्र छुट गया दयानन्द जी से |
- फिर भी किसी भी क्षेत्र में दयानन्द जी का नाम तक नहीं लिया जाता है |
- उस समय के महापुरुषों में से किस-किस को विष दिया गया | दयानन्द जी से ही ऐसी क्या चिढ़ थी|
- उस समय कौनसे ऐसे महापुरुष थे जिसने लाठी-डंडे खाए हो | पत्थरों की मार खाई हो |
- इन्ही को इतना दुःख क्यों मिला?
- यदि आप भी भलाई करने निकलोगे तो आपको भी यातनाए सहनी पड़ेगी |

- जब उनसा कष्ट सहोगे न तब पता चलेगा अच्छाई क्या होती है और अच्छाई करने वाले दयानन्द जी ने क्या-क्या सहा व् देश के लिए क्या-क्या किया |